विचार बिन्दु

करता सा सो क्यों किया, अब करि क्यों पछताए
बोवे पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाए। –कबीर

जिम्मेवार पत्रकारिता की इतनी अधिक जरूरत पहले कभी न थी!

सत्ता के सामने अपना सच बोलना और समाज को आईना दिखाना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है जिसे पूरा करना बेहद मुश्किल काम होता है। इसलिए श्रमजीवी पत्रकार अपने पेशे में भारी दबाव और तनाव में रहते हैं। आज की दुनिया में, किसी श्रमजीवी पत्रकार का अपने कर्तव्य के आदर्श निभाना खांडे की धार पर चलने के समान हो गया है। उनके काम के घंटे लंबे होते हैं। वे लगातार कॉल पर रहते हैं। उनके लिये परिवार के साथ बिताने के लिए समय निकालना कठिन होता है। उनका वेतन भी बहुत उत्साहवर्धक नहीं होता है। वे पत्रकार जो संघर्ष वाले क्षेत्रों से खबरें भेजते हैं वे अपनी जान जोखिम में डालकर ऐसा करते हैं। नियमित बीट करने वाले भी अब सुरक्षित नहीं हैं। शक्तिशाली पदों पर बैठे राजनेता और नौकरशाह, सभी प्रकार के माफिया, और कानून को धता बताने वाले अन्य लोगों में से कोई भी श्रमजीवी पत्रकार के साथ सहज नहीं होता है। पत्रकारों को धमकियां मिलती हैं। उनके और उनके परिवारों के लिए ऐसे खतरों से निपटना आसान नहीं होता है। अन्य लोगों के लिए यह कल्पना करना ही मुश्किल है कि पत्रकार होना आज कितना दुरूह हो गया है। फिर भी, पत्रकारिता एक बेहद संतोषजनक पेशा है। कानूनी या चिकित्सकीय पेशे को महान पेशा माना जाता रहा है। पत्रकार का काम भी उनसे कम नेक नहीं है। इसीलिये सभी ने अनौपचारिक ही सही पत्रकारिता को लोकतंत्र का अभिन्न हिस्सा माना है। यह सही है कि कानूनी या चिकित्सकीय पेशेवर की तरह, एक पत्रकार के पास भी एक मजबूत नैतिक आधार और दिशा-निर्देश होना जरूरी है। किन्तु इस पेशे में पत्रकार का अपना विवेक ही उसका मार्गदर्शक होता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भारतीय संविधान में निहित एक मूल्यवान और पवित्र अधिकार है। ऐसी स्वतंत्रता के बिना लोकतंत्र में कोई भी आवश्यक और गंभीर चर्चा या बहस नहीं हो सकती। समाचार माध्यम ऐसी बहसों और चर्चाओं का मंच बनते हैं। लेकिन अब पत्रकारिता का स्वरूप पुराने ज़माने के स्वरूप से काफी अलग हो चला है। जीवन में चीजों का बदलना अपरिहार्य है। जैसे-जैसे हमारे आसपास की दुनिया बदली है, वैसे-वैसे ही मीडिया पत्रकारिता भी बदलती गई है। पत्रकारिता जगत में यदि कोई बदलने का इच्छुक नहीं हैं तो वह अवश्य ही पिछड़ जायेगा। पारंपरिक प्रिंट मीडिया के अलावा, अब हमारे पास डिजिटल समाचार मीडिया प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया रिपोर्टिंग भी है। इस प्रौद्योगिकी विकास ने ही वास्तव में पूरी पत्रकारिता को बदल कर रख दिया है। डिजिटल मीडिया का सबसे अधिक महत्व इस बात में है कि उसकी बदौलत अब लोगों को पहले की अपेक्षा अधिक जानकारी आसानी से और तुरंत उपलब्ध हो जाती है। मगर, इससे पत्रकारिता में कुछ समस्याएं भी पैदा कर दीं है। अब तो हर पल खबरें उपलब्ध हैं। चौबीसों घंटे 'रीयल टाइम' में रिपोर्ट देने का ज़माना है। इससे रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार भारी दबाव में रहते हैं। टीवी चैनलों की रेटिंग की दौड़ में, किसी सूचना के प्रसारण से पहले सत्यापन के पत्रकारिता के महत्वपूर्ण सिद्धांत की पालना अब ताक में रखनी पड़ती है। इससे गलत रिपोर्टिंग का खतरा बढ़ जाता है। सोशल मीडिया उस गलत खबर को कुछ ही सेकंड में बढ़ा-चढ़ाकर वायरल कर देता है। एक बार किसी सूचना के प्रसारित हो जाने के बाद उसे वापस लेना कठिन होता है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विपरीत सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म को जवाबदेह ठहराना लगभग असंभव है, भले ही वे कॅरियर और जीवन को बर्बाद करने की क्षमता वाली अपमानजनक सामग्री धड़ल्ले से प्रस्तुत करते हैं।

एक और प्रवृत्ति जो इन दिनों रिपोर्टिंग में देखी जा रही है, वह है समाचारों में वैचारिक रुख और पूर्वाग्रहों का घुसना। व्याख्याएं और राय, तथ्यात्मक रिपोर्टों को अपने रंग में रंग रही हैं। विचारों के घालमेल वाले समाचार एक खतरनाक कॉकटेल बनाते है। इसी के साथ जुड़ी है आंशिक रिपोर्टिंग की भी समस्या है। किसी भाषण अथवा वक्तव्य के कुछ अंशों का एक निश्चित एजेंडे के अनुरूप - संदर्भ से बाहर - हाइलाइट किये जाने के उदाहरणों की कोई कमी नहीं है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में इस पेशे के लोग यह भुला बैठे हैं कि टकराव वाली राजनीति और प्रतिस्पर्धी पत्रकारिता का मेल लोकतंत्र के लिए घातक हो सकता है। पत्रकार का किसी विचारधारा या राज्य के साथ मिल जाना आपदा को बुलावा देने जैसा होता है। पत्रकार एक मायने में न्यायधीश की तरह होते हैं जिनसे यह अपेक्षा होती है कि वे अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं से प्रभावित हुए बिना अपना कर्तव्य निभायेंगे। संवाददाता का काम केवल तथ्यों को रिपोर्ट करना होता है। उनकी व्याख्या और विचारों के लिए समाचारों के कॉलम नहीं संपादकीट पृष्ठ होते हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी रिपोर्टर वाल्टर क्रोनकाइट ने कहा था- हम सभी की अपनी पसंद और नापसंद होती है। लेकिन... जब हम समाचार बना रहे होते हैं - जब हम पहले पन्ने पर समाचार बना रहे होते है, राजनीति को कवर कर रहे होते हैं -तब यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य होता है कि उसमें हम अपने पूर्वाग्रहों की छाया न पड़ने दें। बस यही बुनियादी पत्रकारिता है।

दुर्भाग्य से बहुतों को अब ऐसा भी लग रहा है कि भारतीय लोकतंत्र के आदर्श को बचाने की पत्रकारिता से उम्मीद करना बेमानी है। बाज़ार आधारित शासन व्यवस्था में जहां एक राजनैतिक पक्ष द्वारा किया गया हर काम आवश्यक रूप से दूसरे के लिए बुरा और अस्वीकार्य हो चला है, वहीं मीडिया में पक्ष और विपक्ष की विनाशकारी राजनीति की व्याख्या करना जटिल होता जा रहा है। यह लोकतंत्र के हित में नहीं है।

एक और मुद्दा जो इस समय प्रमुखता से छाया हुआ है वह है मीडिया में जानकारी देने की बजाय ध्यान खींचने पर जोर। ध्यान आकर्षित करने की आशा में समाचार रिपोर्टों के लिए जो शीर्षक दिए जाते हैं वे आकर्षक, लेकिन भ्रामक होते हैं। शीर्षक अक्सर रिपोर्ट की वास्तविक सामग्री को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं, खास पर डिजिटल मीडिया में। व्याख्यात्मक एवं काल्पनिक हेडलाइंस सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से साझा होती हैं। जिन दबावों के तहत पत्रकार काम करते हैं हमें उनके प्रति सहानुभूति हो सकती है, लेकिन उन्हें बेलगाम होने की तो स्वीकृति नहीं दी जा सकती। समाचारों का व्यवसाय करने वाले संस्थानों और अन्य मीडिया संगठनों से आशा की जाती है कि वे यह अनुभव करें कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक पवित्र संवैधानिक अधिकार है। यह संविधान प्रदत्त ऐसी स्वतंत्रता है जो पत्रकारिता उद्यम, पत्रकारों, संपादकों और मीडिया प्रबंधन के प्रत्येक व्यक्ति पर बड़ी ज़िम्मेदारी डालती है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस फ्रैंकफर्टर ने एक बार कहा था- "प्रेस की स्वतंत्रता अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है, बल्कि एक स्वतंत्र समाज बनाने का एक साधन है।" मगर भारतीय मीडिया में हम पाते हैं कि यहां हर बहस इस अर्थ में होती है कि क्या आप हमारे साथ हैं या हमारे खिलाफ? यह भी एक नई बात हुई है कि हमारा मीडिया विश्लेषण किसी अन्य संभावना को स्वीकार नहीं करता है। आपको या तो आपको अमुक के पक्ष में होना चाहिए, या उसके खिलाफ। यहां यह सवाल भी पूछना माकूल होगा कि आज की गला काट प्रतिस्पर्धी राजनीति आपसी विभाजनकारी लड़ाई में क्या मीडिया परस्पर सम्मान की पारस्परिक अभिव्यक्ति को सुरक्षित रख सकता है? आज की राजनीति पूरी तरह काले और सफेद तक सीमित हो गई है। बीच में कोई शेड नहीं है। किसी ने सही आंकलन किया है कि 'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' भारतीय राजनीति पर लिखी किताब का शीर्षक कभी नहीं हो सकता।

लोकतंत्र एक सतत चलने वाली प्रक्रिया होती है, जो समाज के विभिन्न हितों के बीच आदान-प्रदान, बातचीत और समझौते की व्यवस्था करती है। इस प्रक्रिया को सतत बनाये रखने में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वह संवाद को जगह देती है। संवाद भी कोई कबड्डी का खेल नहीं होता जिसमें खिलाड़ी को गिरा कर दबा लेना और दबे हुए का सांस रोके रख कर विपक्षी खिलाड़ी को उठा लाना होता है। यह किसी भी संजीदा पत्रकार की जिम्मेवारी होती है कि वह राजनेताओं की बक-बक को मर्यादा के मानकों में बनाये रखे और उनके आचरण का सतत आकलन करता रहे। पत्रकारों को उन लोगों द्वारा कही या की गई बातों को देखने या सुनने में सक्षम होना चाहिए जिनसे वे व्यक्तिगत स्तर पर बुनियादी तौर पर असहमत होते हैं। बहुत से लोग यह उचित ही मानते हैं कि हमारी राजनीति का यह दृष्टिकोण, जो हमारे मीडिया में प्रतिदिन आ रही रिपोर्टों द्वारा पुष्ट होता है, हमारे राजनीतिक विमर्श को दूषित कर रहा है। पल-पल में पार्टी की निष्ठा बदलने वाले आज के राजनेता जिन नीतियों के पैरोकार रहे, उनका ही विरोध करने में उन्हें कोई लाज नहीं आती। ऐसे माहौल में किसी निष्पक्ष वैचारिक बहस की संभावना सिर्फ पत्रकारिता में बच रहती है। दुर्भाग्य से बहुतों को अब ऐसा भी लग रहा है कि भारतीय लोकतंत्र के आदर्श को बचाने की पत्रकारिता से उम्मीद करना बेमानी है। बाज़ार आधारित शासन व्यवस्था में जहां एक राजनैतिक पक्ष द्वारा किया गया हर काम आवश्यक रूप से दूसरे के लिए बुरा और अस्वीकार्य हो चला है, वहीं मीडिया में पक्ष और विपक्ष की विनाशकारी राजनीति की व्याख्या करना जटिल होता जा रहा है। यह लोकतंत्र के हित में नहीं है। विचार-विमर्श की एक स्वस्थ परंपरा को पत्रकारिता ही पुनर्स्थापित कर सकती है। मगर वह पत्रकारिता कैसी हो? इस पर महात्मा गांधी की एक टिप्पणी याद आती है जिसमें उन्होंने कहा था: समाचार पत्र मुख्य रूप से लोगों को शिक्षित करने के लिए हैं। वे पाठकों को समसामयिक इतिहास से परिचित कराते हैं। यह कोई मामूली जिम्मेदारी का काम नहीं है। ऐसी जिम्मेदारी निबाह पाने वाले पत्रकार पहले समाचार संस्थानों में काम करते हुए खुद ही तैयार होते थे मगर जब से विश्वविद्यालयों व अन्य संस्थानों में पेशेवर पत्रकार तैयार होने लगे तभी से स्वतंत्र पत्रकारिता खो गई लगती है और जन-संचार सर्वव्यापी हो गया है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

हमें डरावने सपने क्यों आते हैं?

डॉ. रामावतार शर्मा

सपने आना एक सामान्य बात है। बचपन तथा युवावस्था में जब हमारा मस्तिष्क अति सक्रिय होता है तो अनगिनत सपनों का अंबार-सा लगा रहता है। बचपन तथा युवावस्था के सपने अकसर सुहाने होते हैं परंतु यह बात हर व्यक्ति पर लागू नहीं होती है। ऐसा माना जाता है कि हर 20 सपनों में से एक सपना डरावना होता है। इन सपनों को दु:स्वप्न या अंग्रेज़ी में नाइटमेयर कहा जाता है। चूंकि इस तरह के सपने आबादी के एक बड़े हिस्से को प्रभावित करते हैं और कितने ही लोगों के सामान्य जीवन को नकारात्मक रूप में अव्यवस्थित भी करते हैं इसलिए इस विषय पर बेहतर जानकारी समाजोपयोगी हो सकती है। यहां एक स्वाभाविक जिज्ञासा उपजती है कि दु:स्वप्न हमारे अर्धचेतन या अचेतन मन में क्यों और किस तरह स्थापित रहते हैं? इसको जानना इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि डरावने सपने हमारे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण आयामों में से एक नींद को नष्ट करने में सक्षम होते है।

हर जीव की यह नैसर्गिक इच्छा होती है कि जब भी नींद में जाने का समय हो तो चंद ही क्षणों में उसका शरीर गहरी निद्रा में प्रविष्ट हो जाए ताकि वह जब जागृत स्थिति में आए तो स्वस्थ, तरोताजा और आनंदित महसूस करे, उसमें ऊर्जा का नव संचार हो और उसे महसूस हो कि वह अब अगले कई घंटों तक थकान से दूर रहेगा। ध्यान में रहना चाहिए कि नींद हमारे मस्तिष्क को विश्राम देती है, शरीर की मृतप्राय कोशिकाओं की जगह नई कोशिकाओं को स्थापित करती है, हृदय, लिवर, गुर्दे और मांसपेशियों को विश्राम दे कर उनमें ऊर्जा भरती है। स्वस्थ एवम् दीर्घायु शरीर के लिए निद्रा एक महत्वपूर्ण आधार है। ऐसे में जब कोई डरावना सपना आए जिसमें आपको लगे कि आपको सांस लेना भारी पड़ रहा है और महसूस हो मानो छाती पर कोई भारी दैत्य आ बैठा हो तो आपको इसके निवारण के लिए गंभीरता से सोचना चाहिए। किसी भी समस्या के निवारण का प्रथम कदम होता है उसके कारण को विस्तृत रूप से समझना ताकि प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

डरावने सपने आने का सबसे बड़ा कारण प्रत्यक्ष या परोक्ष मानसिक तनाव या घबराहट को माना जाता है। जब आप अपने दिन को रात में घसीट लाते हैं तो दिन के साथ रात भी कष्टपूर्ण हो जाती है। आज के समय में अधिकतर लोगों के जीवन में आनंद की बजाय सुविधाएं और स्टेटस अधिक महत्वपूर्ण हो चले हैं। आनंद स्थाई रह सकता है जबकि सुविधाओं और स्टेटस का लगातार ह्रास होता रहता है परंतु इस बात को समझ लेना और फिर आत्मसात कर लेना हर मनुष्य के लिए सम्भव नहीं होता है। यह एक बड़ा कारण है कि दिन अपनी सारी समस्याओं के साथ रात में प्रविष्ट हो लोगों को चैन की नींद नहीं लेने देता है। इस सब का एक दुष्परिणाम डरावने सपने हो सकते है। इसके अलावा सामाजिक मीडिया का राजनीतिकरण और वहां फेक वीडियो द्वारा बर्बर हिंसा की संभावनाओं का दुष्प्रचार, ओटीटी सीरियल्स द्वारा हिंसा, आतंक और भय का प्रसार, टीवी समाचारों में हिंसा और भयानक दुर्घटनाओं के दृश्य का प्रसारण आदि कई कारण होते हैं जिनके फलस्वरूप अर्ध सुषुप्त मस्तिष्क दु:स्वप्न की स्थिति में आ जाता है। हॉरर सिनेमा डरावने सपनों का एक महत्वपूर्ण कारक है।

युद्ध से लौटे सैनिक, अति कष्टदायक प्रसूति से गुजरी महिला, प्राणघातक दुर्घटना से बचे लोग आदि के मन पर ऐसे कारक अंकित हो जाते हैं जो लोगों को जीवनपर्यंत के डरावने सपनों की दुनिया में धकेल सकते हैं। ये सब ऐसी परिस्थितियां हैं जो मस्तिष्क की गहराइयों में स्थापित हो जाती है और रात की नींद को बुरी तरह से कुप्रभावित करती हैं। ब्लैकमेलिंग, हत्या की आशंका, अत्यधिक पाने को दौड़ भी कई बार डरावने सपनों को जन्म दे सकती हैं। मोटापे के कारण उपजी स्लीप एपनिया की स्थिति भी अकसर कुस्वप्न का कारण बन सकती है। नशीले पदार्थों का सेवन, अत्यधिक शराब और सोने से पहले कॉफी का सेवन भी डरावने सपनों को आमंत्रण देना है। नींद यदि पूरी नहीं की जाए या फिर टुकड़ों में ली जाए तो भी भय पैदा करने वाले सपने आ सकते हैं।

नाइटमेयर के कारणों की जानकारी और फिर उनके निवारण का प्रयास ही इसका इलाज है। यहां किसी दवा की बजाय एक अनुभवी संवाद चिकित्सक (टॉक काउंसलर) से बातचीत अधिक उपयोगी हो सकती है। आपका सलाहकार डरावने सपने रोक तो नहीं पाएगा परंतु सपने में यदि आप किसी हवाईजहाज से सीधे नीचे गिर रहे होंगे तो पैराशूट खुलने में सहायक जरूर होगा ताकि आप सुरक्षित धरती पर उतर सकें।

-डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

महामृत्युंजय रुद्र महायज्ञ में शामिल हुये सरसंघ चालक डॉ. मोहन भागवत

डॉ. मोहन भागवत ने पावटा के बाबा बालनाथ मंदिर परिसर में महायज्ञ में आहुति दी

पावटा, (निसं)। पावटा कस्बे के बावड़ी स्थित बाबा बालनाथ मंदिर परिसर में बाबा बस्तीनाथ के सान्निध्य में एक वर्ष चलने वाले महामृत्युंजय रुद्र महायज्ञ में मंगलवार को संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने शिरकत की।

- **मोहन भागवत ने मंदिर परिसर में पौधरोपण कर श्रद्धालुओं को संबोधित किया**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत अलवर प्रवास कार्यक्रम के बाद मंगलवार सुबह 10 बजे सड़क मार्ग से बावडी स्थित यज्ञ स्थल पर पहुंचे, जहां यज्ञशाला पहुंचकर उन्होंने यज्ञ में आहुति दी। वहीं बाबा बस्तीनाथ ने संघ प्रमुख मोहन भागवत को यंत्र धातु का स्मृति चिह्न भेंट कर उनका स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने मंदिर परिसर में पौधरोपण भी किया। इस दौरान डॉ. मोहन भागवत ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए श्रद्धालुओं को देश और समाज के काम में साधु-संतों का विशेष योगदान होने व हिंदू संस्कृति की रक्षा सामाजिक समरसता के लिए सभी को मिलकर एक-दूसरे के लिए जीने की कल्पना, एक-दूसरे का सहयोग करके सभी को अपने बराबर लाने का भाव रखकर समाज में काम करने की बात कही। इसके बाद डॉ. भागवत शाहपुरा के लिए रवाना हो गये। आरएसएस प्रमुख डॉ. भागवत को जेड प्लस सिक्योरिटी मिली हुई है। ऐसे में जिला प्रशासन भी उनकी सुरक्षा को लेकर काफी गंभीर था। सुबह से ही आश्रम के चप्पे-चप्पे पर पुलिसकर्मियों का पहरा था। इसे लेकर सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था थी। विराटनगर डीवाईएसपी रोहित सांखला ने बताया कि सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते एसपी, दो एडिशनल एसपी, चार डीवाईएसपी, आठ थानाधिकारी समेत 250 पुलिसकर्मी तैनात रहे।

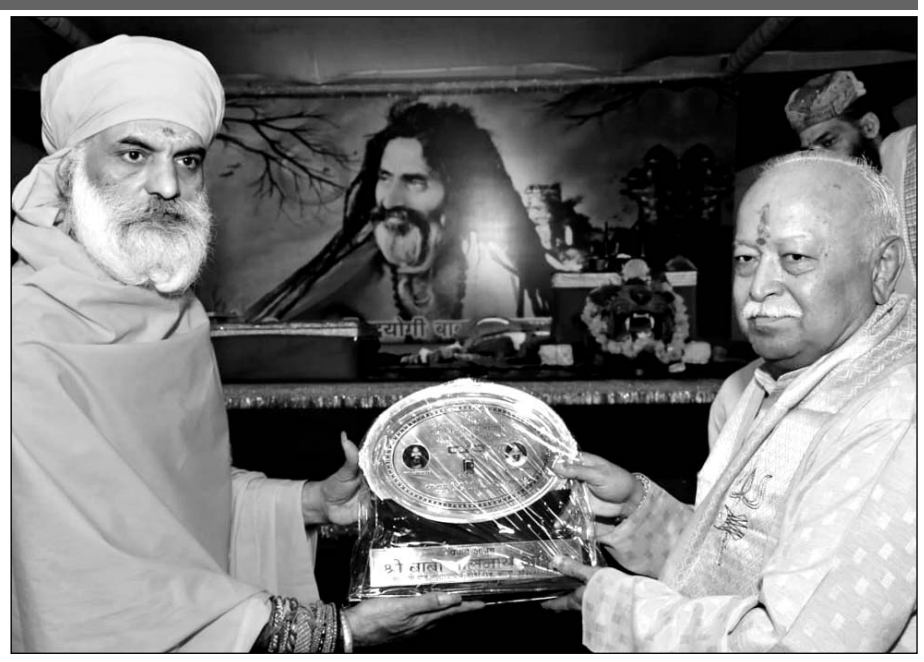

बाबा बस्तीनाथ ने संघ प्रमुख मोहन भागवत को यंत्र धातु का स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत किया।

अमेरिकी जवानों ने महाजन फील्ड फॉयरिंग रेंज में 36 डिग्री तापमान में निशाना साधा

35 डिग्री में रहने वाली विदेशी सेना राजस्थान में कर रही है युद्धाभ्यास

बीकानेर, (निसं)। अमेरिकी और भारतीय सेना की जल्दी ही अग्निपरीक्षा शुरू होगी। दोनों देशों की सेनाओं को अपना दमखम दिखाने का मौका दिया जाएगा। 72 घंटे तक चलने वाली लड़ाई बस प्रैक्टिस (अभ्यास) के लिए होगी। इस दौरान दोनों देशों के सेना के जवान संयुक्त रूप से आतंकी ठिकानों को टारगेट करेंगे। 35 डिग्री में रहने वाली विदेशी सेना के जवान राजस्थान (बीकानेर) के रेगिस्तान में पिछले करीब एक हफ्ते से पसीना बहा रहे हैं। 36 डिग्री की गर्मी में दुश्मनों को मात देने के गुर सीख रहे हैं। दोनों देशों के इस संयुक्त अभ्यास में बड़ी संख्या में महिला सैनिक भी हिस्सा ले रही हैं।

अमेरिकी आर्मी से करीब 50 महिलाएं इस युद्धाभ्यास में शामिल हुई हैं। वहीं इतनी ही संख्या भारत की ओर से भी है। दोनों सेनाओं की महिलाएं भी पुरुष जवानों के साथ भारी हथियारों से लेकर हलके हथियारों को चलाने की प्रैक्टिस कर रही हैं। अमेरिका के जवान हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम और एम 777 हॉवित्जर तोप लेकर आए हैं। इन दोनों की ट्रेनिंग भारतीय जवानों को दी जा रही है।

इसके साथ ही भारतीय जवान पैदल सेना के रूप में दुश्मन के ठिकानों पर हमला करने की तकनीक सीख रहे हैं। अमेरिकी सेना भीषण गर्मी में युद्धाभ्यास के तरीके सीख रही है। एम 777 हॉवित्जर तोप के माध्यम से इन ठिकानों पर निशाने साधे जा रहे हैं। माइनस डिग्री में काम करने वाले अलास्का के ये अमेरिकी जवान मंगलवार को महाजन फील्ड फायरिग रेंज में 36 डिग्री तापमान में निशाने साधते नजर आए।

इंडियन आर्मी और अमेरिकी सेना के युद्धाभ्यास का 20वां एडिशन बीकानेर के महाजन फायरिंग रेंज में नौ सितंबर को शुरू हुआ था। 22 सितम्बर तक चलने वाले इस अभ्यास में इंडियन आर्मी के साथ दुनिया के शक्तिशाली देश अमेरिका के जवान हिस्सा ले रहे हैं। यह अब तक का सबसे बड़ा युद्धाभ्यास है। 14 दिन तक चलने वाले इस अभ्यास के अंतिम 72 घंटे बहुत ही महत्वपूर्ण होंगे। इस दौरान दोनों सेनाओं के 1200 सैनिक आपस में ही लड़ेंगे।

यह अभ्यास आतंकी गतिविधियों से निपटने में मददगार साबित होगा। दोनों देशों के संयुक्त ऑपरेशन से भी यह जुड़ा है। अंतिम क्षणों में आतंकी ठिकानों पर हमले के दौरान आपसी तालमेल का भी शानदार प्रदर्शन किया जाएगा। अभ्यास के लिए अमेरिका के अलास्का में तैनात आर्मी भारत आई है। इसे "आर्कटिक एंजेल्स" के नाम से जाना जाता है। अमेरिका की यह टुकड़ी -35 डिग्री की ठंड में युद्ध करने में माहिर है। वहीं भारत की 9वीं राजपूत इन्फेंट्री इसमें भाग ले रही है। इसके सभी जवानों की मूंछें एक जैसी हैं। एक साल पहले भारतीय सेना के जवान अलास्का गए थे। वहां -35 डिग्री में युद्ध करने के टिप्स लिए थे। अब अमेरिका से सेना यहां (भारत) आई है।

अमेरिकी सेना के 600 जवान भारतीय सैनिकों के साथ रेगिस्तानी इलाकों में युद्ध का अभ्यास कर रहे हैं। दोनों देश साथ मिलकर आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद करने के मिशन पर काम कर रहे हैं। दोनों देश टैंक, राइफल लेकर मैदान में उतरेंगे। यहां आतंकी ठिकानों को तोप से उड़ाने की प्रैक्टिस करेंगे। दुश्मन के नजदीक जाकर छुरे से उसका सीना चीर देने की एक्सरसाइज करेंगे। इस दौरान दोनों सेनाएं आपसी तालमेल का भी प्रदर्शन करेंगी। यह मिशन आतंकी गतिविधियों को रोकने के लिए आयोजित किया जाएगा।

पिछले 9 दिन से अमेरिका और भारत की सेना के जवान महाजन रेंज में फायरिंग का अभ्यास कर रहे हैं। इस दौरान कभी तोप से हमला करना तो कभी राइफल लेकर धोरों में दौड़ने की प्रैक्टिस चल रही है। दोनों सेनाओं के जवान एक दूसरे के हथियारों को देख और समझ रहे हैं। ताकि भविष्य में कभी आतंकी हमले में संयुक्त सेना मिशन पर जाएं तो आपसी तालमेल बेहतर रहे।

भारतीय जवान अमेरिका के हाई मोबिलिटी रॉकेट तकनीक को समझ रहे हैं। हाल ही में यूक्रेन-रूस के समय अमेरिकी जवानों ने यूक्रेन के लिए इस रॉकेट का उपयोग किया था। करीब 310 किलोमीटर मारक क्षमता वाली ये रॉकेट तकनीक कैसे काम करती है, इसका भी प्रशिक्षण लिया जा रहा है। 21 सितम्बर को इसका प्रदर्शन करने की तैयारी हो रही है। दोनों देशों के जवान सूर्योदय से पहले दौड़ लगाने निकल जाते हैं। इसके बाद दिनभर युद्धाभ्यास का आयोजन होता है और शाम को वक्त मिलते ही जवान क्रिकेट और फुटबॉल जैसे खेल भी खेल रहे हैं। अमेरिका के सैनिक फुटबॉल को काफी पसंद कर रहे हैं।

अलास्का अमेरिका की सबसे ठंडी जगहों में से एक है। यहां सर्दियों में तापमान -35 डिग्री तक चला जाता है। अलास्का ऑर्ग के अनुसार, 1961 में यहां -61 डिग्री तापमान दर्ज किया गया था। इसी भीषण बर्फ की जगह में अमेरिका की आर्कटिक एंजेल्स अपनी प्रैक्टिस करती है। भारत की पैदल सेना राजपूत इन्फेंट्री, अमेरिकी सैनिकों को अर्द्ध रेगिस्तानी इलाकों में फायरिंग व आर्टिलरी ट्रेनिंग दे रही है। भारत की 9 राजपूत इन्फेंट्री के पास पैदल जवान और जमीन से जमीन, जमीन से हवा में मार करने वाले हथियार हैं। भारतीय जवान छुरे और अन्य हथियारों से दुश्मन को मारने की ट्रेनिंग भी दे रहे हैं। इस अभ्यास में धोरों में खुद को छुपाकर दुश्मन के नजदीक आते ही हमला करने के गुर सिखाए जा रहे हैं।

जयसमंद सेंचुरी में एक अक्टूबर से सफारी शुरू होगी

उदयपुर, (निसं)। जयसमंद सेंचुरी में एक अक्टूबर से जीप सफारी शुरू होगी। इसको लेकर वन विभाग ने तैयारियां शुरू कर दी है। जयसमंद पाल पर रूठी रानी महल तक जाने के लिए भी ट्रैक तैयार किया गया है। सफारी के दौरान तेंदुए, चिंकारा, चीतल, जंगली सूअर, भालू, नीलगाय, मोर, बंदर आदि प्रजाति के वन्य जीवों को देखा जा सकता है। सेंचुरी में चिंकारा के कुनबे में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इसके लिए वन विभाग की ओर से सेंचुरी के 400 हैक्टेयर एरिया में ग्रासलैंड तैयार करवाया गया है।

विभाग के अनुसार सेंचुरी में 40 चीतल, 20 सांभर,160 नीलगाय, 9 चिंकारा है। वाइल्ड लाइफ टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए सफारी की मार्केटिंग भी की जा रही है। जयसमंद सेंचुरी में दो फेरों में सफारी होती है। सुबह 6 से 9 बजे तक और शाम को 4 से 6 बजे तक। जयसमंद पाल पर रूठी रानी महल तक जाने के लिए भी ट्रैक तैयार किया गया है। इससे पर्यटक आसानी से महल तक पहुंच जाते हैं। यह ट्रैक 2.5 किमी लंबा है। झील के किनारे-किनारे पहाड़ी पर जा रहे इस ट्रैक से सर्दियों में धूप सेंकते हुए मगरमच्छ को देखा जा सकता है। जानकारी के अनुसार पिछले साल मई माह में जयसमंद सेंचुरी में जीप सफारी शुरू की गई थी। इसमें 14 और 22 किमी के दो ट्रैक बने हुए हैं। सेंचुरी का गेट उदयपुर-बांसवाड़ा हाईवे पर स्थित है। हर साल मानसून में एक जुलाई से 30 सितंबर तक प्रदेशभर में सभी सेंचुरी और टाइगर रिजर्व में जीप सफारी बंद रहती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 18 सितम्बर, 2024

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, बुधवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र दिन 11:00 तक, गंड योग रात्रि 11:28 तक, बव करण प्रात: 8:04 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग प्रात: 8:04 से दिन 11:00 तक है। राजयोग रात्रि 4:20 से सूर्योदय तक है। आज शुक्र तुला राशि में दिन 1:57 पर प्रवेश करेगा। आज सत्यव्रत है। सिंजा माता पूजन, भागवत सप्ताह और गोत्रि रात्रि व्रत आरम्भ होंगे। आज प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। आज से पितृपक्ष महालय श्राद्ध आरम्भ होंगे। आज प्रतिपदा का श्राद्ध है। आज क्षमावाणी और पडवा ढोक (जैन) और पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 10:50 से 12:21 तक, चर 3:23 से 4:54 तक, लाभ 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:25

मेष
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा।

वृष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। रचनात्मक कार्यों में समय व्यतीत होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कन्या
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।